International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
May-June 2018, Volume-5, Issue-3 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

समन्वित क्षेत्रीय विकास की संकल्पना में मानव संसाधनों का स्थानिक प्रारूप का विश्लेषण

Rajni Saini,
Research Scholar, Dept of Geography,
North East Frontier Technical University

Dr. Chandrabhan Singh,
Research Supervisor, Dept of Geography,
North East Frontier Technical University

सार–

वर्तमान युग साइबर युग है अतः आज मानव को एक विशिष्ट शैली एवं वातावरण में रहना होगा। नियोजन एक मानवीय क्रिया है जो मानव के संसाधनो से जुडी है। मानव इन उपलब्ध संसाधनों को कैसे, कब तक, कहां तक प्रयोग करना चाहता है। यह सब उसके विचार एवं योग्यता पर निर्भर करता है, अतः नियोजन क्रम में मानसिक तैयारी, नियोजन कार्य के लिए एक पूर्व चिन्तन, मानव द्वारा मानव के लिए एक आशावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यद्यपि सभी नियोजन सफल नही होते परन्तु सोच कर नियोजन प्रक्रिया को छोड़ना या इसे विचार में न लाना एक बड़ी भूल होगी। इसी विचार को ध्यान में रखकर अनेक नियोजन योजनाओं को अंगीकृत किया गया। जैसे राष्ट्रीय राजधानी प्रदेश (एन0सी0आर0) सेक्टोरल नियोजन, स्थानीय नियोजन, नगर एवं नगर क्षेत्र नियोजन क्षेत्रीय नियोजन, समन्वित ग्रामीण विकास नियोजन पर कार्य किया जा रहा है।

प्रस्तावना–

प्रादेशिक विकास भूगोल क्षेत्र में एक नई विधा के रूप में है जिसका प्रमुख सम्बन्ध विकास के स्थानिक तत्वों से है, जबकि आर्थिक दृष्टिकोण से अथवा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इसका सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय अथवा किसी प्रदेश के सामायिक विकास से होता है। वस्तुतः किसी भी क्षेत्र अथवा प्रदेश के विकास का मुख्य आधार उस क्षेत्र की संसाधन सम्भावनाओं तथा संसाधनो के अधिकतम उपभोग से जनित विकास से हैं सामान्य रूप से प्रशासनिक एवं राजनैतिक इकाईयां पुनः अपने प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों की उपब्धता तथा उनके उपभोग स्तर पर ही निर्भर करती है। वैसे 'विकास' शब्द स्वयं में बहुअर्थी है, क्योंकि विकास प्रक्रियाएं किसी एक तत्व से जुडी हुई नही हैं, ये प्रक्रियाएं कृषि, उद्योग, समाज, शिक्षा, यातायात, परिवहन आदि अनेक तत्वों पर अन्योन्याश्रित रहती है। इसलिए विकास का सही अर्थ किसी प्रदेश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास से माना जाता है। आर्थिक विकास से सम्बन्धित समस्त शोध कार्यो में सामाजिक तत्वों की उपेक्षा की गयी है जबकि आर्थिक और सामाजिक दोनों एक दूसरे के पूरक एवं अर्न्तसम्बन्धित हैं डी0 बार्किन 1972 ने विकास को एक दोहरी प्रक्रिया बताया है और इसके द्वारा प्रदेश का विकास, सुदृढ़ एवं प्रदेश में संरचनात्मक परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को ही विकास की प्रक्रिया माना है।

प्रत्येक प्रदेश अपने आप में एक पूर्ण इकाई होता है, परन्तु उसकी उप प्रादेशिक भिन्नताओं के कारण उसकी विकास दर सर्वत्र समान नहीं होती, जिसका प्रमुख कारण प्रदेश में उपलब्ध ससं ाधनों की असमानता है इसलिए उस क्षेत्र का सामाजिक स्तर, विकास स्तर उसी क्षेत्र के अन्य भाग से पिछड़ा अथवा उन्नत देखा गया है, इसलिए विकास की ऐसी प्रक्रिया का होना आवश्यक है ताकि क्षेत्र विशेष की विभिन्नताओं को कुछ हद तक दूर किया जा सके और समस्त क्षेत्र विकास की सामान्य प्रक्रिया से जुड़ सकें और उसमें संरचनात्मक मूलभूत परिवर्तन आ सके।

मनुष्य में सन्तोनोत्पत्ति की एक स्वभाविक इच्छा होती है और इस इच्छा में कोई कमी नही हुई है। जनसाधारण में यह इच्छा बराबर पायी जाती है। जनसंख्या एक सतत गतिशील एवं भौगोलिक अवयव है। मानव को खुद को जीवित रखने एवं संन्तान को जीवित रखने के लिए उसे भोजन की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु मानव की सन्तान उत्पत्ति की गति इतनी होती है उतनी तेजी से अनाज उत्पादन करने की क्षमता नही होती है। जबकि जनसंख्या ज्यामीतिय गति से वृद्धि करती है। जबकि अनाज की वृद्धि समान्तर गति से होती है। जन्मदर में अधिकता एवं मृत्यु दर में कमी जनसंख्या की वृद्धि की ओर संकेत करती है। जिसे घनात्मक प्राकृतिक वृद्धि कहते हैं। मृत्युदर अधिक होने से जनसंख्या घटने की बात कम हुआ करती है। पृथ्वी के धरातल पर जो भी जनसंख्या है उसके द्वारा पृथ्वी के विभिन्न भागों में जो क्षेत्रीय विषमतांए लक्षित होती है। उनकी उत्पत्ति में मनुष्य का मुख्य हाथ है। भारत जैसे देश में जनसंख्या आवश्यकता से अधिक है। खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक सामग्री की कमी है। लोगों का स्वास्थ्य बुरा है। अधिकांश जनसंख्या बेरोजगार व गरीबी के नीचे है। जनसंख्या में समय समय पर होने वाले परिर्वतन जनसंख्या वृद्धि में योगदान करते हैं। प्रवजन क्रिया के फलस्वरूप प्रतिवर्ष जनसंख्या में होने वाली वृद्धि जनसंख्या विकास कहलाती है। इस विकास का आंकलन प्रत्येक दशकीय जनगणना के द्वारा किया जाता है। इस आंकलन का आधार जन्म मृत्यु दर तथा सामान्य स्वास्थ्य के आधार पर होता है। जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारकों सामान्यतया ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र में विकास अधिक सुविधाएं, स्वास्थ्य सुविधाओं का बेहतर होना, अच्छे रोजगार के अवसर, नगदी फसलों की अधिकता, धार्मिक कुरीतियां, कृषि का मुख्य जीविकापार्जन साधन होना जनसंख्या वृद्धि के प्रेरक कारण है। मानव प्रकृति का ही अंग है। जीवित रहने के लिए भोजन, पानी, ऊर्जा के साधनों की आवश्यकता है जो उसे प्रकृति से ही प्राप्त होती है। मानव प्रकृति के अर्न्तसम्बन्धता समय समय पर बदलते रहते हैं। मानव प्रारम्भ से ही प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा हैं। प्रकृति भी एक सीमा तक उसे सहयोग कर संन्तुलित करने का प्रयास करती है। फिर प्रकोप के माध्यम से जनसंख्या का सन्तुलित प्रयास करती है। मानव को उसकी सीमा में रहने का सन्देश देती है। मानव एवं प्रकृति सदैव एक दूसरे के प्रति संघर्षशील रहते हैं।

वर्तमान में तमाम आविष्कारों के कारण जन्म दर बढ़ी है क्योंकि स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के साथ मृत्यु दर में अनापेक्षित कमी आयी है। अतः आज के परिपेक्ष में आवश्यकता है कि ऐसी नीतियों को नियोजित रूप से विकसित किया जाये जिसमें प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तिगत पुनरोत्पादन निर्णयों में एक उत्तरदायित्व पूर्ण स्वायत्तता का विकास हो। विकास नितियों के सम्बन्ध में समन्वित प्रकृति का एवं बहुआयामी विकल्प उपलब्ध हो। जनसंख्या वृद्धि के कारण वर्तमान में नैतिक मूल्यों के परिपेक्ष में जनसंख्या समस्याओं के समाधान में नैतिक पक्ष अधिक सशक्त हो। अतः शोध कार्य में जनसंख्या वृद्धि, जन्म, दर, प्रजननता परिवार नियोजन, राष्ट्रीय प्रादेशिक संसाधनों

पर जनसंख्या का दबाव, जीवन की गुणवत्ता का मूल्यांकन ग्रामीण क्षेत्रों के जीवन की गुणवत्ता एवं विकास कार्यो को जनवृद्धि के प्रभावों को जानना अति आवश्यक है।

यदि विकासशील क्षेत्रों के सन्दर्भ में देखें तो जनसंख्या एवं विकास अन्योन्याश्रित है। जनसंख्या वृद्धि के साथ विकास दर घटती है। जैसे – जैसे विकास दर बढ़ती है जनसंख्या घटती है। परन्तु भारत के सन्दर्भ में यह अवधारणा असत्य साबित हुई यहां पर सरकारी प्रचार प्रसार प्रयास के बावजूद जनसंख्या वृद्धि पर रोक न लग सकी। जिसमें प्रमुख कारणों में भारतीय प्रजातंत्र में सरकारी स्तर पर जनसंख्या नियंत्रण के प्रति उदासीनता, अशिक्षा एवं रूढिवादी विचारधारा है। इसी कारण विकास प्रक्रिया को जनसंख्या समस्या बाधित कर रही है। क्षेत्र की आर्थिक सम्पन्नता उस क्षेत्र में भौतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। यह क्षमता पूर्ण रूप से मानव शक्ति संसाधन की संख्या एवं गुणवत्ता द्वारा निर्धारित होती है। यह मात्र मानव संख्या अर्थात् जनसंख्या नही है वरन् मानव का जीवन स्तर प्रभावित एवं जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा है। सांस्कृतिक एवं आधारभूत संसाधन क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

जनसंख्या अध्ययन के अर्न्तगत जनसंख्या वृद्धि, स्त्री पुरुष अनुपात, आयु संरचना, कार्यशील जनसंख्या, शिक्षा साक्षरता, रोजगार, बेरोजगारी उद्यमिता आदि शामिल हैं। भौतिक तत्व संसाधन तभी बन सकते हैं जब स्थानीय जनसंख्या उसे प्रयोग कर अपना आर्थिक विकास तीव्र कर सकें मनुष्य उत्पादन एवं उपभोक्ता दो रूप में कार्यशील हैं। मानव द्वारा संसाधनों की खोज कर उनकी वृद्धि कर उनको लम्बे समय तक प्रयोग हेतु नियन्त्रण किया जा सके।

तालिका–1.1

सहारनपुर व तहसील नकुड में जनसंख्या वृद्धि घनत्व (1921 से 2011)

जनगणना वष	कुल जनसंख्या	वार्षिक वृद्धि प्रतिशत	तहसील नकुड	वार्षिक वृद्धि	घन्तव प्रति वर्ग किमी0
1921	938161	–	168561	–	155
1931	1044794	11.37	190498	11.30	176
1941	1180466	12.99	215217	12.91	198
1951	1353636	14.67	250128	16.60	231
1961	1615478	19.34	293672	19.30	271
1971	2054834	20.70	354156	20.60	327
1981	2673561	24.92	443408	25.20	409
1991	2309029	8.6	486109	11.64	449
2001	2896863	12.5	747451	15.37	690
2011	3466382	16.4	698990	69	643

स्रोतः जनपद सांख्यिकी विभाग

जनसंख्या वृद्धि :

जनसंख्या की वृद्धि की आवश्यकता जनसंख्या के बढ़ने की दर को देखने के लिए होती है। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के द्वारा आगामी दशकों में बढ़ने वाली जनसंख्या का अनुमान लगाया जा सके जिसकों सम्भावित जनसंख्या का नाम दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अधिक वृद्धि दर के क्षेत्रों में जनसंख्या नियन्त्रण के प्रयासों को बल मिल सकें जनपद सहारनपुर की जनसंख्या वृद्धि को दृष्टिगत करे तो 1921 से 2011 तक के उपलब्ध आकंडो से ज्ञात होता है कि 1921 से 1951 के मध्य वार्षिक वृद्धि का अन्तराल 11.37 से 14.67 रहा जो अन्य आगामी वर्षो की तुलना में बहुत कम है। 1921 आधार वर्ष पर 1931 में 11.37 व 1941 में 12.99 तथा 1951 में 14.67 वार्षिक वृद्धि अंकित की गयी 1961 से 1981 के मध्य यह वृद्धि पूर्व के तीन दशकों की तुलना में 19.34 से 24.92 के प्रतिशत के मध्य रही 1971 में 20.70 प्रतिशत, 1981 में 24.92 प्रतिशत रही। ये उल्लेखनीय वर्ष प्रतित होता है। 1991 में यह घटकर मात्र 8.6 तथा पुनः बढकर 2001 में 12.5 प्रति और 2011 में 16.4 प्रतिशत रहा। वार्षिक वृद्धि अंकित की गयी जनपदीय जनसंख्या वृद्धि में 1931 से 1951 तक का औसत वृद्धि 11.01 रही इसी प्रकार जब भी 1961 से 1981 के तीन दशकों में औसत वृद्धि दर 21.65 प्रतिशत रही उसके उपरान्त दोनों दशकों की वार्षिक वृद्धि 10.55 प्रति रही।

इसी प्रकार से तहसील नकुड़ की जनसंख्या वृद्धि को दृष्टि डालें तो 1921 से 2011 के आंकडों पर दृष्टि डाले तों आंकडो से ज्ञात होता है। 1921 से 1951 में मध्य वार्षिक वृद्धि का अन्तराल 11.30 से 16.60 वार्षिक वृद्धि अंकित गई 1961 से 1981 के मध्य यह वृद्धि पूर्व के तीन दशकों की तुलना में 19.30 से 25.20 प्रतिशत के मध्य रही 1971 में 20.60, वर्ष 1981 में 25.20 प्रतिशत रही। यह भी उल्लेखनीय वर्ष प्रतीत होता है। वर्ष 1991 में यह घटकर 11.64 प्रतिशत रह गयी और 2001 में यह पुनः बढ़कर 1537 हो गयी बढने का क्रम जारी रखकर यह 2011 में बढकर 18.3 प्रतिशत हो गयी तहसील की जनसंख्या वृद्धि में 1931 से 1951 तक की औसत वृद्धि 11.60 प्रतिशत रही। इसी प्रकार जब 1961 से 1981 के तीन दशकों में औसत वृद्धि दर 21.17 प्रतिशत रही इसके उपरान्त तीनों दशकों की औसत वृद्धि दर 15.77 प्रतिशत है।

तालिका– 1.2

चयनित गांव में जातिय समीकरण

क्र.	गाँव	गुर्जर	मुस्लिम	नाई	झीवर	सैनी	राजपूत	हरिजन	ब्राहम्ण	जुलाहे
1	हरपाली	0	215	150	98	40	0	796	372	342
2	पदमनगली	0	201	0	86	0	0	60	41	71
3	सांपला	1950	115	0	115	0	0	55	82	84
4	सढौली	872	0	0	0	24	0	119	70	114
5	रणदेवा	62	648	0	48	0	0	0	1146	185
6	साहबेमजरा	0	81	10	35	771	250	287	0	193
7	नल्हेडा	703	66	0	85	0	0	471	85	35
8	दौलतपुर	0	400	0	96	150	0	208	73	148
9	जाजवा	0	40	0	47	60	0	17	65	46
10	रानीपुर	0	130	30	170	70	0	0	180	300

	योग	13251	3587	1896	180	1115	250	2013	2112	1318
	प्रतिशत	27.06	14.30	1.35	5.88	8.47	1.88	15.19	15.93	9.94

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में हिन्दु गुर्जर एवं मुस्लिम जातीय वर्ग की प्रधानता है तथा हिन्दु वर्ग की उपजातियां भी अधिक संख्या में गांव मेंयह समीकरण बराबर है। अधिकाश गांव एकल जाति की प्रधानता वाले गांव है। जातीय संरचना के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि तहसील नकुड प्रमुख रूप से हिन्दु व मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। तीसरा धर्म सिक्ख व अन्य धर्म कम संख्या में पाये गये हैं। जातीय संख्या के द्वितीयक आंकडे उपलब्ध न होने के कारण 30 गांव का व्यक्तिगण सर्वेक्षण किया गया सम्बधित सम्पूर्ण गांव तहसील के सभी क्षेत्रों उत्तर पूर्व, पश्चिम दक्षिण उप दिशाओं से गांव चयनित कर कुल जनसंख्या में जातीय जनसंख्या ज्ञात की गयी। चयनित गांव, तिरपड़ी, अध्याना, रणदेवा, कंकराला, टाबर, नसरूल्लागढ, कांजीबास, बान्दूखेडी, साढौली, गदरहेडी, कुतुबपुर, झाड़वन, कुण्डाकला, खेडा अफगान, सांगाठेडा, फन्दपुरी, महंगी दूधला, झबीरन, मंधौर बरथाकायस्थ, दुमझेड़ा, बुडढाखेड़ा, टोडरपुर, अलीपुरा, सांपला, साल्हापुर, लखनौती, रानीपुर, फतेहपुर। हिन्दु बाहुल्य गांव, रणदेवा, अध्याना, दूधला, फन्दपुरी, झाड़वन, महंगी, खण्डलाना, अम्बेहटा, है। इन गांव में हिन्दु जाति, गुर्जर, ब्राहम्ण, सैनी, हरिजन, राजपूत, वैश्य, कश्यप, कुम्हार, जुलाहे, अधिक गांव गुर्जर बहुल्य जाति हैं।

मुस्लिम बहुल्य गांव घाटमपुर, बाढ़ीमाजरा, सांगाठेड़ा, लखनौती, धलापड़ा, दुमझेडा, बुडढाखेडा, आदि हैं। मुस्लिम वर्ग में शेख, जुलाहे, तेली, पठान, अन्सारी फकीर आदि हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र में हिन्दु गुर्जर, मुस्लिम गुर्जर की अधिकता है। हिन्दु गुर्जर व मुस्लिम गुर्जर प्रमुख काश्तकार जाति हैं। यद्यपि अन्य जाती सैनी, राजपूत, हरिजन, जाट, बाल्मीकी, आदि जातियां भी हैं। परन्तु अपेक्षाकृत कम संख्या में है। क्षेत्र की अर्थव्यवस्था काश्तकार जाति हिन्दु गुर्जर एवं मुस्लमान से अधिक प्रभावित है। क्योंकि कृषि का अधिकतम भू भाग इन दो जातियों के पास है। इन बड़े कृषक जाति समूह के पास भूमि तो अधिक है परन्तु ये स्वयं कृषि नहीं करते श्रमिकों द्वारा कृषि कार्य करवाया जाता है। कृषि श्रमिकों का इस क्षेत्र के विकास में अधिक योगदान है। सीमान्त अथवा लघु कृषकों की महिलाएं भी कृषि में सहयोग करती हैं।

जनपद में भी कुल जनसंख्या 62.70 प्रतिशत हिन्दु 36.12 प्रतिशत मुस्लिम एवं 1.18 प्रतिशत अन्य जातियाँ हैं। इस प्रकार से कुल जनसंख्या 98 प्रतिशत हिन्दु एवं मुस्लिम दो ही जातियों के अन्तर्गत है।

तालिका–1.3

तहसील नकुड में आयु संरचना –2018

आयु वर्ग में	पुरुष	प्रतिशत	महिलाएं	प्रतिशत	कुल स्त्री–पुरुष जनसंख्या
0–4	60343	16.3	50961	15.5	111304
5–14	69599	18.3	63454	19.34	133053
15–34	105139	28.4	91072	27.05	196211
35–54	86258	21.3	176606	21.14	262864

55 से अधिक	48127	11.2	46029	14.2	94156

स्रोत : जनगणना विभाग से प्राप्त आंकडों के आधार पर

आयु वर्ग जनसंख्या का वह भाग है। जिसमें जनसंख्या को विभिन्न आयु समूहों में वर्गीकृत किया जाता है। जिसका प्रमुख लक्षण यह है। सम्पूर्ण जनंसख्या में अकार्यशील जनसंख्या कर्मठ जनसंख्या तथा उच्च आयु के कारण अकार्यशील जनसंख्या का विभाजन किया जा सकें अथवा नियोजन के भिन्न आधारों के लिए जनसंख्या को समुचित आंकड़ों को प्राप्त किया जा सकें।

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या की विद्यमान आयु संरचना का विशेष महत्व होता है। क्योंकि आयु संरचना से अनेक तत्वों की महत्वपूर्ण जानकारी होती है। क्षेत्र में शिशुओं व वृद्धों की जनसंख्या, आश्रिता, स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या, कार्यशील जनसंख्या का अनुपात, विवाह योग्य जनसंख्या, मतदाताओं की संख्या आदि है। आयु वर्ग के आधार पर ही प्रजनन योग्य स्त्रियों की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके द्वारा जनसंख्या का अनुमान भी लगाया जा सकता है। क्षेत्र की आयु संरचना का उस क्षेत्र की आर्थिक व्यवसायिक ढ़ाचे के साथ–साथ संस्कृति व राजनैतिक ढांचे को भी सीधे तौर पर प्रभावित करती है। डॉ0 चन्द्रशेखर के अनुसार – ''व्यक्ति की आयु उसमें स्कूल प्रवेश'' श्रम बाजार प्रवेश मत देने के अधिकार विवाह आदि के समय को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्षेत्र की क्रियाशील जनसख्या के भावी विकास को जानने के लिए वहाँ के समस्त लोगों का आयु वर्ग के आधार पर अध्ययन किया जाता है। यदि जनसंख्या में शिशुओं और वृद्धाओं की अपेक्षा युवकों का अनुपात अधिक हो तो वहां जन्म दर अधिक होती है तथा मृत्यु दर कम होगी क्योंकि शिशुओं व वृद्धों में मृत्यु दर अधिक होती है वे पुनरूत्थान में हाथ नही बढा सकते, आयु संरचना का मृत्यु तथा विवाह पर जनसंख्या के आर्थिक एवं व्यवसायिक संगठन तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 0–4 वर्ष जनसंख्या का पुरुष 16.3 प्रतिशत तथा स्त्री 15.5 प्रतिशत दोनों में विशेष अन्तर नही है। 15 से 14 वर्ग में पुरुष, महिलाओं में अन्तर लगभग 1.8 प्रतिशत कम है। पुरुष 18.8 तथा महिलाएं 19.4 प्रति कम है। 15 से 34 वर्ग में पुरुष 28.4 प्रतिशत एवं महिलाए 27.5 प्रतिशत है। 35–54 वर्ष वर्ग में आश्चर्यजनक रूप से दोनों प्रतिशत एक ही है। 21.4 प्रति है 55 से अधिक आयु वर्ग में पुरुष 11.7 तथा महिलाए 14.2 प्रतिशत है। अधिक आयु वर्ग में प्रतिशत बढा है। 2001 में राष्ट्रीय स्तर पर 6.3 प्रतिशत परन्तु शोध क्षेत्र में यह दुगना है। उसका कारण हैं जीवन प्रत्याशा में वृद्धि इस कारण वृद्धों की संख्या बढ़ी है। वस्तुतः 15 से 59 वर्ष तक आयु वर्ग की कार्यशील जनसंख्या में रखा गया है। यह वृद्धि 1971 के उपरान्त अधिक हुई है। उपरोक्त आयु वर्ग प्रमाणिक आंकड़े उपलब्ध होने के कारण 24 प्रतीक ग्रामो/ व्यक्तिगत सर्वे पर आधारित निष्कर्षों का परिणाम एवं विशेलषण है।

सारांश

इस प्रकार से यह क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है तथा अधिकांश कृषक छोटे आकार के भू–स्वामी है। जनसंख्या का आर्थिक स्तर बहुत अधिक सुदृढ़ नहीं है। क्योंकि 26.5 प्रतिशत कर्मकार कृषि श्रमिक हैं। जनसंख्या की साक्षरता शिक्षण संस्थान छात्र शिक्षक अनुपात में अधिक अन्तर है। स्त्री पुरुष अनुपात सभी दृष्टिकोणों से यह क्षेत्र औसत

आर्थिक सम्पन्न क्षेत्र है। यद्यपि सम्पन्न कृषक समाज सभी सुविधाओं के धारक हैं इस अध्याय में जनंसंख्या विभिन्न विशेषताओं का आंकलन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- यादव, राजेश कुमार एवं पाण्डेय, जगत नारायण (2005) : 'ग्रामीण विकास हेतु कृषि नियोजन मनकापुर तहसील (गोण्डा जनपद) का एक प्रतीक अध्ययन', द0भा0भू0प0 जून–दिसम्बर, पृ. 1.7.
- कोहन, सी.एफ. (2007) : चैप्टर फाइव इन अमेरिकन ज्योग्राफी : इवेन्ट्री एण्ड प्रास्पेक्ट्स, एडी, पी.ई. जेम्स एण्ड सी.एफ. जोहन्स एसोसिएशन ऑफ अमेरिकन ज्योग्राफी, सहाराक्यूरेज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कुरूक्षेत्र पत्रिका मई 2018, दिसम्बर 2018, जनवरी 2017 एवं मार्च 2017
- मामोरिया, सी.बी. (2008) : भारत का वृहद् भूगोल, साहित्य भवन आगरा, पृ. 445.
- माथुर एवं गर्ग एस. (2005) : स्ट्रेटजिज एण्ड प्रैक्टिसेज ऑफ रूरल डेवलपमेंट इन इंडिया, अरिहन्त पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. 20.
- मिलर, एच.वी. (1948), ट्रेनिंग ज्योग्राफी फॉर प्लानिंग जर्नल ऑफ ज्योग्राफी, अंक 18, पृ. 179.